VOL- IX | ISSUE- IV | APRIL | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

नारी उत्थान : एक अध्ययन

सुदेश शोधार्थी,
रबींद्रनाथ टैगोर वि.वि., भोपाल

सार तत्व –

'नारी उत्थान' हरिशरण वर्मा का एक नाटक संग्रह है जो नारी के उत्थान की प्रेरणा ही नही देता बल्कि नारी समस्याओं के समाधान का संस्तुति भी करता है और साथ ही बदलाव का प्रयास भी करता है। यह उपेक्षित, शोषित, दमित अकुलाहट भरी चेतना का स्वर भारतीय समाज में नारी के विकास की वकालत करता है। समसामयिक मूल्य चिंतन के साथ सामाजिक चेतना के जागरण में हरिशरण वर्मा का साहित्य सृजन अनवरत जारी है। यहाँ यह भी कहना संगत होगा कि हरिशरण वर्मा साहित्य में नाटक विधा के लिए जाने जाते हैं और नाटक विधा अन्य साहित्यिक विधाओं की मंचीय संदर्भों के साथ पाठक पर अमिट प्रभाव डालता है। डॉ. हरिशरण वर्मा का नाटक संग्रह नारी उत्थान, नारी शोषण की समस्याओं को सकारात्मक पहलू के साथ प्रस्तुत करते हुए समाज में नारी सम्मान और नारी प्रतिष्ठा का भाव इसके माध्यम से व्यक्त करते हैं। यहाँ भारतीय समाज में नारी की स्थिति में अभी भी संवैधानिक अधिकारों के चलते, सुधार होने बाकी है। यह दृष्टिकोण सामाजिक दृष्टि ही नही बल्कि मानवीय दृष्टि को उल्लेखित करता है। प्रेम विवाह के नाम पर धोखा नारी जीवन की नही भारतीय समाज की बड़ी विडम्बना है। देह व्यापार की बुराई से समाज को मुक्त करने की बात को लेकर बहुत क्षुब्ध है। यह नाटक इसी चेतना से अनुप्राणित है।

कुंजी शब्द –

नाटक, विधा, जीवन शैली, भारतीय समाज, बधाई, शुभकानाएँ, मानव नारी, विवशता, प्रदर्शित, जाग्रति, जागरण, विश्वासघात धोखा, सावधान, नाटककार, हरिशरण वर्मा।

प्रस्तावना –

'नारी उत्थान' में नाअककार हरिशरण वर्मा एक महत्त्व उपदेश देकर भारतीय समाज की नारियों की समझ में यह बात डालने की कोशिश करता है कि वे किस प्रकार से समाज की मासिक विकृति से अपने आपको बचाकर रख सकती है। यहाँ लेखक ने महिला सहायता संस्थान में (NGO) पनपती सामाजिक बुराई और महिला उत्थान के नाम पर उनकी पोल खोलने की भी वकालत करते हुए यह स्पष्ट किया है कि सबके सब स्वार्थ में लीन दिखाई पड़ते है।

प्रस्तुत नाट्य कृति में हरिशरण वर्मा ने तत्कालीन समस्याओं को जिसको समाज में घटना कहा जाता है को उजागर किया है। यह कौशिश पब्लिशिंग हाऊस, जगत पुरी दिल्ली-९३, से वर्ष २०२१ में प्रकाशित है। यह एक पांच पेज की कृत है और इसमें दो नाटक 'नारी उत्थान और 'भ्रष्टाचार' संकलित हैं। 'भ्रष्टाचार' में भारतीय सरकारी व्यवस्था में कार्यालयों की घूसखोरी, जनमत की मिट्टभ्पलीत और नियम कानून की व्यवस्था के चित्रण का उद्देश्य रहा है। यह 'भ्रष्टाचार' हमारे अध्ययन का आधार वही है। हम केवल नारी उत्थान जो इस कृति का पहला प्रभाग है उस पर विचार करेंगें। समाज में व्याप्त दहेज की बुराई का एक उदाहरण प्रस्तुत है, ''लड़का तलाश करने से पहले तो रूपयों का प्रबंध करना पड़ेगा, क्योंकि हम जो कमाते रहे, वह तेरी पढ़ाई पर लगाते रहे, सोचा

था कि बेटा पढ़-लिख कर नौकरी लग जाएगा तो खुशी होगी और घर संभल जाएगा।''१ यह भारतीय समाज में लड़की के पिता की मानसिकता खूब देखी जा सकती है। डॉ. हरिशरण वर्मा की यह कृति नत्रह दृश्यों में विभाजित है और इससे सत्रह पुरूष और पांच महिला पात्रों सहित पात्रों की कुल संख्या बाईस है। आश्रम और एन.जी.ओ. की सत्यता का वर्णन है, ''वहाँ पर लड़कियों की क्षमता से अधिक कार्य लिया जाता था, भरपेट खाने को नही दिया जाता था, और मैत्री वाली बात मैंने आपको बता ही दी।''२ यहाँ मैंत्री वाली बात का मतलब नारी के दैहिक शोषण से है। आश्रम कहने को नारी उत्थान के लिए परन्तु स्वाभिनारी के लिए इससे घृणित कोई जगह नही हो सकती। ''वहाँ लड़कियों को रात्रि के अंधेरे में कार में बैठा कर, सारी-सारी रात के लिए, अधिकारियों, धनाढ्यों, नेताओं की काठी पर भेजा जाता था, वही करवाने के लिए जिससे दुखी होकर उन्होंने इस आश्रम की शरण में आयी हैं।''३ साथ ही इस कृति में न्याय की व्यवस्था की बात कतरे हुए लेखक अपने संवाद के माध्यम से कहते है, ''साधू और भगत की जमानत की अर्जी मंजूर की जाती है और, मुकद्दमें की अगली तारीख १६ अगस्त २०२० लगाई जाती है।''४ इस प्रकार सामाजिक न्याय मिलता नही और न्यायालय में तारिख दर तारिख इंतजार करना पड़ता है। 'नारी उत्थान' लव जिहाद जैसे मुद्दों और नारी आश्रमों की व्यवस्था और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रभाव के साथ वेश्यावृति जैसी धिनौनी सामाजिक मानसिकता पर अपने अभिव्यक्ति देता साथ में भारतीय न्याय व्यवस्था की भी बात कहता है।

डॉ. हरिशरण वर्मा मूल्यों के संवाहक है। इनका लेखन सोच और सुधारवादी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। समर्थ नाटककार के रूप में इनका नाट्य सृजन 'नारी उत्थान' सशक्त नाट्य सृजन है।

'भारतेंदु हरिश्चन्द्र की नाट्य परम्परा का निर्वहन करते हुए हरिशरण वर्मा सामाजिक विषमताओं को लेकर नाट्य सृजन में रत् है और समाज के भीतर जमी रूढिवादिताओं को समाप्त करने के लिए समाज में जागरण का अलख जगाते हुए, यह कामना कर रहे है कि एक दिन यह समाज बुराईयों से अवश्य मुक्त होगा। भारतेंदु का 'भारत-दुर्दशा', सर्वेश्वर दयाल सिक्सेना, का 'बकरी' जिन उद्देश्य को लेकर लिखे गए है उसी प्रकार के सामाजिक-राजनीतिक उद्देश्य को लेकर हरिशरण वर्मा ने नारी उत्थान लिखा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सरल सुबोध ओर चुटील शैली में नाट्य सृजन करना हरिशरण वर्मा की विशेषता है। लेखक का मानना है कि परिस्थितियों की विवशता मनुष्य को वह सब करने के लिए राजी कर सकती है जिसके लिए वह कभी मना करता होता है। समाज की बहुलता उसे यह करने के लिए बाध्य करती है वह समाज के सहयोग की अपेक्षा करता है परन्तु उसे मिलता नही। इसलिए अपने पैरों पर खड़े होकर जिंदगी जीना उसे एक नई शुरूआत की ओर आता है। समाज से यह अपेक्षा की जाती है कि सभी का सहयोग करता हुआ चला और अपनी स्वार्थलालुपता को अपनी सामाजिक और मानसिक विचारधारा पर हावी ना होने दे। परन्तु ऐसा होता नही। क्या भारतीय आश्रम व्यवस्था का यही चरित्र रह गया कि बाल्मिकी जैसे ऋषि ने एक अबला सीता को शरण दी थी और शरण के साथ उसके संरक्षण की भी जिम्मेवारी ली थी, उसको पद दलित करके स्वार्थ आधारित और अबला नारियों के शोषण का पर्याय बन जाए। यहाँ छिन्न आती इस प्रकार की प्रसंग अब पढ़ने को मिलते है। नेता देश सेवक न रहकर वासना सेवक नजर आते है। यह सामाजिक जीवन नही नरक है। अपनी विचारधारा को सामाजिक बनाकर इस नरक से समाज को बाहर नही निकालने और मानवीय संदर्भों को पुनः स्थापित करने के लिए हमें डॉ. हरिशरण अपने नारी उत्थान से प्रेरित करते है।

''मेरा मानना है कि यह सम्पूर्ण समाज की बेटी और बहन है। सामाजिक अव्यवस्था, गरीबी

लाचारी और वासनात्मक प्रवृति ही एक भोली-भाली मासूम लड़की को वेश्या बना देती है, इसके लिए हम समाज के सभी व्यक्ति जिम्मेदार हैं।''५ यह हरिशरण वर्मा का एक सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने वाला संवाद है।

कहने का अभिप्राय है कि आलोच्य कृति में लेखक बड़े सरल और विनित रूप में यह बताने की कोशिश की है कि भारतीय परम्पराए समाज जिसके वर्णन और दर्शन हेतु विदेशियों में जिज्ञासा रहा करती थी, पतन की ओर जा रहे हैं। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर शोध करने वाले लेखक इस बात को भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि जीवन में यह बात आवश्यक है कि व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को समझे और उसे व्यक्ति जैसा मान सम्मान दे। ''प्रत्येक समाज में प्रत्येक प्रकार के आदमी होते है, फिर तुम्हारे इस अनुपम सौंदर्य को देखकर कोई भी मोहित हो जाता, फिर मैं तो तुम्हारे साथ हूँ तुमको चिंता करने की कोई आवश्यकता नही।''६ यह सत्य है हमें किसी का मद्दगार बनना चाहिए।

पसंहार –

वस्तुत उपरोक्त वर्णन के पश्चात समवेत रूप में कहा जा सकता है कि साहित्य की जीवंतता इसी में निहित होती है कि उसमें शाश्वत अभिव्यक्ति होती है। यहाँ यह बात 'नारी उत्थान' के ऊपर खरी उतरती है। जीवन में शिक्षा और जागरण मनुष्य के चरित्र को संवारने का कार्य करते है। 'नारी उत्थान' भी इसी प्रेरणा की अभिव्यक्ति करता है। लेखक मानता है कि एक दिन पूरी उम्मीद से यह समाज उसकी आवाज सुनेगा पर और कुछ नही कहना चाहता लेखक।

नाटक में सक्ष्म और समर्थ पात्रों का संयोजन है। गतिशीलता से युक्त पात्रानुकूल भाषा के साथ नाट्सौन्दर्य का गुण भाषा में विद्यमान है। ''नारी उत्थान' की रेखांकन योग्य विशेषता यह है कि कथानक नातिलघुनाति दीर्घ होते हुए भी अनुकूल दृश्यों में विभाजित है और पात्रों की संख्या कम करने के पश्चात रंगसूत्रों से सम्पन्न करवाकर उपयुक्त मंचीय क्षमता से परिपूर्ण बनाकर, टेलीकास्ट या फिर नुक्कड़ नाटक के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूची –

१. नारी उत्थान, डॉ. हरिशरण वर्मा, पृष्ठ १३
२. नारी उत्थान, डॉ. हरिशरण वर्मा, पृष्ठ २७
३. नारी उत्थान, डॉ. हरिशरण वर्मा, पृष्ठ ७२
४. नारी उत्थान, डॉ. हरिशरण वर्मा, पृष्ठ ३२
५. नारी उत्थान, डॉ. हरिशरण वर्मा, पृष्ठ ४३
६. नारी उत्थान, डॉ. हरिशरण वर्मा, पृष्ठ २१